साहित्य / काव्य के तत्व

भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने साहित्य के तत्वों पर भी विचार किया है। काव्य बनाने के लिए उसका अस्तित्व सिद्ध करने जो तत्व होते हैं उन्हें ही काव्य के तत्व कहा जाता है। काव्य की यह अनिवार्य तत्व है। काव्य में एक विशिष्ट प्रकार का भाव होता है। इस भाव को परखनेवाला या सोचने वाला एक विचार होता है। इसे सजाने वाला भी एक तत्व होता है और इसे प्रकट करने वाला भी एक तत्व होता है। इन सभी का मिलन से जो रूप होता है उसे ही काव्य के तत्व कहा जाएगा। इस आधार पर काव्य के तत्व निम्नानुसार है।

शब्द तत्व : -- काव्य के कला पक्ष से संबंधित इस तत्व को शैली तत्व भी कहा जाता है। कविता में 'शब्द तत्व' की विशेषता विद्यमान होती है। शब्द तत्व के विविध रूप है - अलंकारों का शब्दगत चमत्कार, शब्द चयन से उत्पन्न पद की एक विशेष गति, प्रवाह संगीतमयता आदि। काव्य का श्रुतिगत प्रथम प्रभाव इसी तत्व के कारण पड़ता है और यही कविता की किसी पंक्ति को चिरकाल तथा रमणीय भी बनाए रखता है। इतना ही नहीं शब्द तत्व कभी की भाव लहरी और कल्पना का प्रेरक भी होता है। शब्द समूह से बनी गति से प्रेरित होकर प्रायः सबसे पहले कवि के अंतः करण से छंद जागृत होता है। अतः विविध छंदों का निर्माण शब्द तत्व द्वारा ही होता है। शब्द की गति का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

उदाहरणार्थ "आनंद उमंग मन ,यौवन उमंग तन
रूप की उमंग उमगति अंग - अंग है।"

इस उदाहरण में शब्द तत्व का प्रभाव स्पष्ट है। एक के स्थान पर उसी अर्थ का दूसरा शब्द रख देने से वह प्रभाव नष्ट हो जाता है। कवि को शब्द की विशेष परख होने के कारण काव्य प्रभावशाली बनता है।

अर्थ तत्व : -- अर्थतत्त्व काव्य का अनिवार्य तत्व है। बिना अर्थ के तो काव्य का अस्तित्व ही नहीं। अर्थ शब्द की प्रधान शक्ति है। अर्थद्योतन के लिए अभिधा, लक्षणा, व्यंजना तीन प्रमुख शक्तियां मानी गई है। रमणीय अभिव्यक्ति व्यंजना द्वारा चमत्कारी अभिव्यक्ति लक्षणा द्वारा और स्वाभाविक अभिव्यक्ति अभिधा द्वारा होती है। काव्य के अंतर्गत तीनों का स्थान है। काव्य का पूर्ण सौंदर्य तब होता है जब शब्द, अर्थ, बुद्धि, भाव, कल्पना सभी का चमत्कार एक साथ उपस्थित हो वही सर्वश्रेष्ठ काव्य पंक्तियां होती है।

उदाहरणार्थ "मोतियों जड़ी ओस की डार
हिल जाता चुपचाप बयार"।

यहां अर्थ की विशिष्ट अभिव्यक्ति होने के कारण चरित्र निर्माण हुआ है यह सत्य है जीवन की क्षणभंगुर का भाव है बोध और विशाल सत्य को साकार बनाने वाली कल्पना मोतियों के समान ओस की बूंदों से सुशोभित डाली के सौंदर्य को सन में वायु के चकोर एसे नष्ट कर देती है इस विचार से विषाद का भाव गहरा होता है और सत्य का स्वरूप प्रकट होता है।

भाव तत्व : -- काव्य में भाव तत्व सबसे अधिक प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है। भाव कवि की कल्पना को प्रेरणा देता है। भाव संक्रामक होते हैं। उनकी अभिव्यक्ति दूसरों के हृदय में उसी प्रकार की अनुभूति जागृत करती हैं। दुख, दर्द, सहानुभूति, करुणा, आनंद, प्रेम,दुलार आदि भाव जब काव्य में प्रस्तुत किए जाते हैं तब ऐसा लगता है यह भाव कवि के नहीं बल्कि हमारे ही है। भाव तत्व के कारण ही यह अनुभूति हमें होती है। भाव काव्य का बड़ा व्यापक तत्व है। यह पाठक और श्रोता का भी संस्कार करता है। भाव को साकर रूप देनेवाले शब्द, अर्थ और कल्पना है। बिना किसी उक्ति-चमत्कार के भी भाव तत्व के कारण गहरा प्रभाव पड़ता है। लोकगीतों का भाव रूप सर्वविदित है। भाव संगीत, आत्मकथा का भी प्रेरक है जो लोग काव्य का प्रधान स्वरूप गीति के रूप में देखते हैं वह वास्तव में काव्य के भाव तत्व को ही प्रमुख रूप में स्वीकार करते हैं।

उदा. "जीन दिन देखे वे कुसुम, गई सो बोति बहार
अब अलि रही गुलाब में, अपत कंटीली डार
माली आवत देखि के कलियन करी पुकार
फूले फूले चुन लिए, कलि हमारी बार"।

कल्पना तत्व : -- जीवन के विविध प्रसंगों एवं अनुभवों तथा दृश्यों को प्रस्तुत करने का कार्य कल्पना करती हैं। निराकार वस्तुओं और भावों को आकार देने का काम भी कल्पना करती है। चरित्र या पात्र के व्यक्तित्व को साक्षात उपस्थित करना, भाव को जगाने वाले चित्र अंकित करना, कल्पना के द्वारा ही संभव है। कवियों के भावों को सजीव अभिव्यक्ति कल्पना तत्व की सहायता से हो सकती है। यहां तक की भूतकाल को वर्तमान काल में परिवर्तित करना कल्पना तत्व का ही कार्य है।

काव्य को सुंदरता प्रदान करना, सुख - दुख से संबंधित चित्रावली तैयार करना, नए - नए प्रतीक निर्माण करना, आदि बातें बिना कल्पना के संभव नहीं।। काव्य की शोभा बढ़ाने का कार्य कल्पना शक्ति पर ही निर्भर है।

उदा . "रघुपति कीरती कामिनी, क्यों कहे तुलसीदास,
सरद विकास प्रकास ससि, चिबुक चारू तिल जास "।

बुद्धि तत्व : -- बुद्धितत्व को 'विचार तत्व' भी कह जाता है। बुद्धि तत्व का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है। वही कवि को विचार संपदा प्रदान करता है। कवि के दृष्टिकोण को योग्य दिशा देता है। वह जीवन और जगत के चिरंतन सत्य को मूर्त रूप देने का प्रयास करता है।

काव्य में बुद्धि तत्व योग्य शब्दों से विचार एवं कल्पना का संयोजन करने का कार्य करता है। प्रमुख रूप से कथा संगठन, चरित्र निर्माण और घटनाओं के चुनाव में बुद्धि तत्व का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। उदाहरणार्थ - किसी उपन्यास का कथानक ऐतिहासिक हो तो उसे इतिहास के उसी काल में प्रस्तुत करना होगा। ऐतिहासिक वातावरण कैसा था यह बुद्धितत्व बताता है। अर्थात ऐतिहासिक वातावरण बुद्धि तत्व के बिना असंभव होगा । वरना रामायण का काल आधुनिकता में प्रस्तुत करने से विसंगति आ जाएगी। इतना ही नहीं वह न आधुनिक हो जाएगा और न ही प्राचीन। इसी तरह आनंद व्यक्त करने के लिए योग्य शब्दों का चयन ही आवश्यक होगा तभी तो भाव का प्रभाव दर्शकों या वाचकों पर पड़ सकता है। उपन्यास में विविध प्रसंगों को उपस्थित करने के लिए बुद्धि तत्व सहायता करता है। नायक और खलनायक के चरित्र चित्रण में जो फर्क नजर आता है वह भी बुद्धि तत्व के कारण ही। सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि काव्य को लोकमंगल बनाने के लिए बुद्धि तत्व काम करता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि साहित्य के तत्व एक दूसरे के साथ इस तरह मिले हुए होते हैं की उनको अलग करना संभव नहीं होता। भाव,कल्पना, बुद्धि शब्द का संगठित रूप साहित्य होता है।युगीन परिस्थिति और विचारधारा के अनुरूप किसी एक तत्व की व्याप्ति बढ़ जाती है लेकिन अन्य तत्व भी कम अधिक मात्रा में साहित्य में विद्यमान होते ही है।